1786

133
250

Shukla
14/09/22

Name → Maitreya Kumar Shukla.

UPSC roll no. → 0418573.

"मैं जानता हूँ कि मैं बुद्धिमान हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता।"

ध्यान देने योग्य बातें

- छोटे पैराग्राफ में निबंध लिखें
- उदा० का प्रयोग और बेहतर तरीके से करें एवं अन्य उदा० दें/
- भूमिका एवं निष्कर्ष को और प्रभावी बना सकते हैं/
- उद्धरण का प्रयोग और बढ़ाएँ/

(भूमिका अच्छी रखी है।)

प्रसिद्ध ग्रीक दर्शनशास्त्री सुकरात की यह कहानी बहुत प्रचलित है कि जब एक व्यक्ति ने उसकी तारीफ करते हुए यह कहा कि आप सब जानते हैं तथा आप सबसे ज्यादा बुद्धिमान हैं तो इस पर सुकरात ने यही जवाब दिया था कि— "मैं जानता हूँ कि मैं बुद्धिमान हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता।"

(इतना लम्बा पैराग्राफ न लिखें)

(छोटा पैरा० लिखें)

कुछ नहीं जानना का तात्पर्य यहाँ इस अर्थ में नहीं है कि आप निरक्षर हैं बल्कि इस संदर्भ में है कि इस असीमित ब्रह्मांड

के एक छोटे से ग्रह पृथ्वी के भी एक साधारण नागरिक के रूप में आपका कुछ भी जान लेना दरअसल कुछ भी नहीं जान पाना है।

अगर हम इस वर्तमान दुनिया की बात करें तो यहाँ बुद्धिमान होने का एक ही अर्थ है - बुद्धि का प्रयोग करते जाना तथा जितनी हो सके जानकारी प्राप्त करते जाना वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद की वर्तमान संस्कृति में तो यह परिभाषा और भी संकीर्ण हो गयी है तथा आज बुद्धिमान होने का अर्थ ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सकने तथा दूसरों को अपने हित में इस्तेमाल कर लेने की

यह ठीक है → छोटा पैरा लिखें।

विश्लेषण अच्छा है।

क्षमता से हो गया है।

दरअसल वर्तमान दुनिया मशीनों के अनुप्रयोग में इतनी ज्यादा उलझ गयी है कि इन्हें वे मशीनें ही बुद्धिमान लगती हैं। इसलिए इनका लक्ष्य ज्यादा से ज्यादा तथ्य व सूचनाएँ एकत्र करते - करते उसी प्रकार की बुद्धिमानी प्राप्त करना हो गया है। अगर हम एक समकालीन उदाहरण देखें तो पिछले वर्ष एक शिक्षा तकनीकी कंपनी 'व्हाइट हैट जूनियर' पर इसीलिए कई प्रकार की कार्यवाही की गई क्योंकि वो मात्र 6 वर्ष की उम्र से बच्चों को कोडिंग जैसे ज्ञान सिखाकर बचपन से ही तथाकथित बुद्धिमान बना रहे थे।

अगर हम ~~कथन~~ कथन के एक और पक्ष पर बात करें तो हमारे समक्ष ऐसे कम उदाहरण नहीं हैं जो इस दुनिया की दृष्टि से कई लोगों के अज्ञानी थे पर बुद्धिमत्ता का सही प्रयोग करके असल बुद्धिमान वही कहलाए। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनपढ़ तथा चायवाले होने के बाद (यानि कुछ नहीं जानने के बाद) भी आज विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री हैं। इसी प्रकार मध्यकाल में देखें तो निरक्षर होने के बावजूद अकबर मुगल साम्राज्य का सबसे महान शासक बना तथा यदि अनपढ़ होना, उसका बुद्धिमान न होना होता तो तत्कालीन सांप्रदायिकता पूर्ण

अच्छा प्रयास किया है
↓
विश्लेषण अच्छा है
↓
किंतु छोटा पैराग्राफ लिखें

ठीक है

राजतंत्रों की परंपरा में उसकी छवि एक सहिष्णु राजा की कैसे बनती! इन उदाहरणों से यह धारणा तो खंडित होती है कि बुद्धिमान होना, ज्ञान का भंडार होना है।

अब यदि हम इस आयाम पर विचार करें कि तथाकथित ज्ञान के भंडार तथा सर्वस्व जानने वाले व्यक्ति भी कहीं से बुद्धिमान नहीं होते तो इसके भी पर्याप्त उदाहरण द्रष्टव्य हैं। इन उदाहरणों को तो विस्तार के साथ सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संदर्भों में देखा जा सकता है।

अगर राजनीतिक संदर्भ में इसका उदाहरण देखें तो विश्व

में राष्ट्रवाद की प्रतिमूर्ति बन चुके हिटलर का टैंक में आत्महत्या करना उसकी बुद्धिमानी की ही भयावह परिणति थी। मध्यकाल से ही पूरे विश्व में स्थापित तानाशाही व्यवस्था से ज्यादा ज्ञानवान एक समय कुछ था ही नहीं पर आज लोकतंत्र ने यह धारा पूरी तरह खंडित कर दी है।

सटीक एवं स्पष्ट लिखें

और सटीकता की Need है।

आर्थिक संदर्भों में तो [redacted] सत्यता के साथ यह चीज स्थापित होती है कि वास्तव में जो कुछ सब कुछ जानने का दावा करता है, वह कुछ नहीं जानता। औद्योगिक क्रांति के साथ पैदा हुआ पूंजीवाद जो न्यूनतम हस्तक्षेप की बात करता था तथा रूसी क्रांति के रूप में अपने चरम पर पहुंचने वाली मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा जो एक यूटोपिया के रूप में राज्यविहीन समाज की बात करती थी ये दोनों ही अपने रूप में संशोधन करने को मजबूर हुई तथा दुनिया में मध्यममार्ग का अनुसरण किया गया।

अब सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी इस कथन की जाँच करें तो पश्चिम की भौतिकतावादी संस्कृति तो सर्वज्ञानी थी ही तथा भारत जैसे देशों की अध्यात्मवादी संस्कृति को बुद्धिमत्ताहीन माना

जाता था। पर समय के साथ आज विश्व भर में योग व अध्यात्म का बढ़ता महत्त्व तथा अमेरिका जैसे देश में योग विश्वविद्यालय का खुलना भी ज्ञान के संग्रहण मात्र को बुद्धिमत्ता नहीं मान रहा तथा केवल आध्यात्मिक होना ही बुद्धिमानी नहीं यह भारत को भी समझ आया है।

यह ठीक है।

इन सारे संदर्भों में यह बात तो स्थापित हुई कि वास्तव में सब कुछ जान लेना बुद्धिमानी नहीं है तो फिर बुद्धिमान कौन है? जाहिर है जैसा सुकरात ने कहा था - वही बुद्धिमान है जो यह जान ले

कि सब कुछ जाना ही नहीं जा सकता। ब्रह्मांड के रोज नए-नए आते रोज रहस्य (जैसे - डार्क मैटर तथा डार्क एनर्जी)। ; NASA का यह खोजने का प्रयास कि क्या एलियन है; हमारी धरती के नीचे क्या है; हमारे चारों ओर बदलता मौसम तथा जलवायु परिवर्तन मात्र का परिणाम है? ये सारे प्रश्न हमें उसी बिंदु पर लाते हैं कि वास्तव में इस असीम में हम कुछ जान ही नहीं सकते हैं।

ह च्छा है।

इसलिए बुद्धिमान वही होगा जो उपरोक्त चीजें

को समझ ले तथा अपनी लघुता का एहसास कर ले तथा इस विचार के साथ शांति व सहजता से रहे कि दुनिया में कोई कुछ नहीं जानता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पश्चिमी देशों में पैदा हुई 'हंगरी जनरेशन' (स्पष्ट?) भी यह जानती थी कि वह कुछ नहीं जानती पर वह इसे सहजता से स्वीकार नहीं कर पायी तथा अनास्था व अराजकता से भर गयी इसलिए उसे बुद्धिमान नहीं माना जाएगा।

(और सटीकता की Need)

यह मान लेने के बाद भी कि वह कुछ नहीं जानता उसके बाद भी लगन के साथ डटे रहना ही व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है। भारत की आजादी के बाद की कठिन परिस्थितियों में इसरो अगर यह मान कर रुक जाती कि इन परिस्थितियों में कुछ जाना नहीं जा सकता तो भारत एक अंतरिक्ष महाशक्ति के रूप में कैसे उभरता!

(और स्पष्ट बनाने की Need है)

(...ठीक है किंतु इसे और प्रभावी बनाया जा सकता है)

संपूर्ण चर्चा को अगर संक्षिप्त में समेटा जाए तो यह कहा जा सकता है कि बुद्धिमान व्यक्ति वह नहीं है जो सबकुछ जान लेने की अंधीदौड़ में शामिल है, बुद्धिमान वही है जो अपनी लघुता का एहसास कर ले पर उस पर निराश

→ नित नये परिवर्तनों से जागरूक होते रहना

होने की जगह उसे ही सीने पर तमगे की तरह पहने तथा अपनी इस लघुता में भी अशोक वाजपेयी की इन पंक्तियों की तरह अदम्य आत्मविश्वास का परिचय दे -

(68) "हम छोटे लोग
चाहे अनदेखे बीत जाएँ
कोई तो देखेगा हमारी मुट्ठियों में
गुलमोहर के फूल पे
कोई तो चीन्हेगा
हमारे होठों पर कविताएँ थीं।"

यह उदाहरण ठीक है

महत्वपूर्ण बातें 1.

- निबंध में ऐसे उदा. का उल्लेख करें जिनका ज्ञान तो और किंतु जिन्होंने अपने क्षेत्र में कमाल का काम किया तथा वह वह अपने कार्यों के बारे में जागरूक/समर्पित थे।
- यह बताएँ कि भावी पीढ़ी को यह सिखाएँ कि तथ्य इकट्ठे करने से अच्छा बेहतर इंसान बनें एवं अपने सीमाओं को स्वीकार करें और दूर करने का प्रयत्न करें।

परिवर्तन का रहस्य अपनी सारी ऊर्जा पुराने से लड़ने पर नहीं नए के निर्माण पर केंद्रित करने से है।"

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की एक प्रसिद्ध कविता 'राम की शक्ति पूजा' में जब राम, रावण के साथ महाशक्ति को देखकर निराश हो जाते हैं तथा उन्हें वहाँ जीतने का कोई उपाय नहीं सूझता तथा जाम्बवन्त उन्हें कहते हैं 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' तथा शक्ति की इसी मौलिक कल्पना के दम पर राम, महाशक्ति को अपने पक्ष में कर लेते हैं। यहाँ मौलिक कल्पना से तात्पर्य निश्चय ही यह था कि परिस्थितियों में परिवर्तन तभी आएगा जब राम, नए के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करेंगे न कि तब जब कि वे पुराने से लड़ने में ही अपनी सारी ऊर्जा लगा देंगे।

भूमिका ठीक है। ↓ किंतु इतना लम्बा पैराग्राफ न लिखें ↓ छोटे पैरा में लिखें

परिवर्तन से तात्पर्य सामान्य अर्थों में है बदलाव। पर इसका यदि अर्थ विस्तार करें तो पाएंगे कि परिवर्तन एक वृहद अवधारणा है जो हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में देखी जाती है तथा काम्य भी है। सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन प्रथाओं व रूढ़ियों को बदलकर नए मूल्यों की स्थापना से है, तो आर्थिक क्षेत्र में सभी तक अवसरों की असमान पहुंच तथा भेदभाव को समाप्त कर देने से है।

स्पष्ट प्रमाण है।

राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन की धारणा पुरानी शोषणकारी व्यवस्था को तोड़कर एक नयी समतामूलक तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करना चाहती है।

अच्छा प्रयास

अब अगर कथन के विभिन्न आयामों पर विचार करें तो सर्वप्रथम हमें ऐसे उदाहरण देखने होंगे जो पुराने से ही लड़ने में व्यस्त रहे इसलिए परिवर्तन न लाकर स्वयं पुराने जैसे हो गए। फ्रांसीसी क्रांति जैसी विश्व बदलने वाली घटना के दौरान जैकोबिनों ने सत्ता प्राप्त कर परिवर्तन की वास्तविक स्थापना की बजाय पुरानी व्यवस्था से उन्हीं के तरीके से लड़ते रहे तथा अंत में जनता ने जैकोबिनों को

पहले नये पर केन्द्रित आयाम को लिखना बेहतर होगा

इस आयाम को और सटीक एवं स्पष्ट लिखने की Need है

ही हटा दिया। इसी प्रकार का बढ़िया उदाहरण चीन में चियांग काईशेक थे जो राजतंत्र के विरुद्ध आए थे पर स्वयं तानाशाह हो गए। अमेरिका भी इसी प्रकार का एक उदाहरण है, उपनिवेशवादी दमन से लड़कर जीतने वाले पहले राष्ट्र अमेरिका ने इस व्यवस्था को बदलने की जगह स्वयं एक बड़ी औपनिवेशिक शक्ति बना। ये सभी उदाहरण इसी बात की पुष्टि करते हैं कि बदलाव सामने देख के लाया जा सकता है, पीछे घूमकर लड़ते-लड़ते नहीं।

यह अभी भी अस्पष्ट में है → सटीक लिखें

अब यदि कथन का दूसरा आयाम देखें तो यह तथ्य भी सर्वविदित है कि नए [illegible] के निर्माण पर ध्यान लगाकर कितने ही महानुभावों ने दुनिया में व्यापक बदलाव किए। इस कथन की पुष्टि भी हम सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में उदाहरणों के माध्यम से करेंगे।

यह आयाम अच्छा है।

सामाजिक क्षेत्र में देखें तो भारतीय पुनर्जागरण के पितृपुरुष राजा राम मोहन राय उसकी सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति हैं। देश की जड़ हो चुकी वर्णव्यवस्था, जातिगत भेदभाव, लैंगिक भेदभाव, धार्मिक आडंबर आदि की व्यवस्था से लड़ने के लिए उन्होंने शिक्षा, विज्ञान, तर्कों आदि नयी व्यवस्था का सहारा लिया तथा सामाजिक बदलाव के अग्रदूत बने। यूरोप के मध्यकालीन समाज के संदर्भ में भी यह बात सत्य है, चर्च के अंधविश्वासों से लड़ाई न्यूटन, एडीसन, आइन्सटाइन जैसे विज्ञानों ने विज्ञान की नयी चेतना के दम पर की तथा पूरे समाज को परिवर्तित कर गए।

विश्लेषण दक्षता अच्छी है।

अच्छा आयाम है।

nice

अन्य आयाम → शैक्षिक संस्थाओं में change जाति के खत्म - समानता (?)

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भी यह बात अक्षरशः सत्य है। पूंजीवाद की असमानता को समाप्त करने के लिए जे. एस. मिल कल्याणकारी राज्य की धारणा लेकर

स्पष्ट ?

आए, जो समाज में नए तरीके अपनाकर परिवर्तन को प्रोत्साहित कर सके।

राजनीति के क्षेत्र में तो यह चीज सर्वाधिक द्रष्टव्य है। आजादी के अमृत काल के दौरान यदि इस आजादी के नायक 'महात्मा गांधी' का ही उदाहरण ले तो यह बात स्पष्ट होती है। अंग्रेजो के दमनकारी तथा हिंसक शासन से लड़ाई गांधी ने अहिंसा जैसी नवीन व पवित्र धारणा से की तथा समाज के सभी वर्गों चाहे ग्रामीण हों या शहरी, महिला हों या पुरुष, पूंजीपति हों या

अच्छा विश्लेषण किया है। ↓ हालांकि छोटा पैरा० लिखें

अच्छा प्रयास है। उदा० ठीक है।

मजदूर सभी को इस संघर्ष से जोड़कर इसे दुनिया का सबसे बड़ा स्वाधीनता आंदोलन बना दिया। इसके अतिरिक्त द्वितीय विश्व युद्ध के समय जब जापान पर परमाणु हमले हुए तो जापान ने वहाँ से आगे पूर्ण निःशस्त्रीकरण की नीति अपनाकर यही दिखाया कि इतना विकसित व शांतिप्रिय देश बनकर दिखाने के लिए हथियारों की आवश्यकता नहीं है।

अब यदि हम एक और जटिलता पर विचार करें तो यह भी पाते हैं कि ऐसा हमेशा नहीं होता कि परिवर्तन हेतु पुराने से न लड़ा जाए। कई ऐसे अवसर भी आते हैं जहाँ जब तक पुरानी व्यवस्था से

नहीं लड़ा जाएगा ऐसी नयी व्यवस्था पर ध्यान देने का अवसर ही नहीं आएगा जो परिवर्तन ला सके।

यदि भगत सिंह ने अंग्रेजों को उन्हीं की भाषा में जवाब नहीं दिया होता तो अंग्रेजों के मन में भारतीय प्रतिहिंसा का डर नहीं बैठता तथा वे किसी भी आंदोलन का क्रूरतापूर्वक दमन कर देते।

अगर डॉ. अंबेडकर जाति के मुद्दे पर सवर्ण समाज से झुककर नहीं टकराते तो आज हम मुख्यधारा में लगातार शामिल होते तथाकथित दलित वर्ग को नहीं देख पाते।

यहाँ प्रश्न का एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी निकलता है कि यह कथन जितना बाह्य जगत के लिए सत्य है उतना ही आंतरिक जगत के लिए भी। व्यक्ति अपने भीतर लगातार परिवर्तन करके बेहतर तभी बन सकता है जब वह अपनी सारी ऊर्जा अपनी बुरी प्रवृत्तियों को कोसने में ही खर्च करने के बजाय नयी निर्माणकारी विशेषताओं का अभ्यास करने में उपयोग करे जो वास्तव में उसका चारित्रिक विकास करेंगी।

इस प्रकार उपरोक्त कथन का सूक्ष्म विवेचन करने पर हम पाते हैं कि सामान्यतः यही सत्य है कि बदलाव तभी आता है

सटीक एवं प्रभावी उदा. हैं।

यह ठीक है।

इस आयाम को और सटीक लिखें।

पुरानी प्रवृत्तियों में सुधार

जब उसका प्रयास नए के निर्माण द्वारा किया जाए। पुराने से लड़कर उसी प्रकार हो जाने के कई उदाहरण हमारे सामने हैं तो उतने ही उदाहरण नए पर ध्यान केंद्रित कर सचमुच बदलाव लाने के भी हैं। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है- 'दुनिया बदलने की शुरुआत स्वयं से होती है'। यह परिवर्तन का रहस्य सर्वप्रथम व्यक्ति को अपने ऊपर लागू करना चाहिए तथा 'परिवर्तन, जो संसार का केवल एक ही निश्चित है।' में अपना योगदान देना चाहिए।

निष्कर्ष ठीक है। हालांकि इसे और प्रभावी बना सकते हैं।

(65)

+ अन्य उदा. हैं → नये पर ध्यान क्यों
- पर्यावरण में नवीन तकनीक
- समय अनुसार परिवर्तन
- IT का प्रयोग - Manual की जगह
- नवीन सिंचाई तकनीक, delivery (↑)
- लोकतांत्रिक मूल्यों (↑)